Introduction

भू मि का

मनुष्य के क्रियाकलाप में वातावरण का योगदान महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करता है। शैशव में मन पर पड़े हुए प्रभाव भविष्य जीवन में पल्लवित होकर ठोस कार्य के रूप में प्रतिफलित हो सकते हैं। कथा-साहित्य के प्रति अतीव रुचि का बीज इसी प्रकार मेरे मन में निरे बचपन से ही पड़ गया था। बालबुद्धि के लिए ग्राह्य कोई अच्छी कहानी अथवा कोई रोचक उपन्यास हो और उसे पढ़ न लूँ तब तक जैसे मन को चैन ही नहीं आता था। इस कमजोरी (रुचि) का कारण घर का साहित्यिक वातावरण ही रहा है। पूज्य पिता जी कथाकार श्रीयुत् गंगाप्रसाद मिश्र के साहित्यिक मित्रों की गोष्ठियाँ प्रायः अपने घर पर ही हुआ करती थीं जिनमें अनेक साहित्यकारों के नामों की चर्चाएँ होती थीं, उनके साहित्यिक कृतित्व के सम्बंध में विचार व्यक्त किए जाते थे। इन सब साहित्यिक चर्चाओं का बचपन में कोई महत्व प्रतीत नहीं होता था, किन्तु बड़े होने पर आज अनुभव होता है कि शैशव-काल के संस्कार कहीं बड़े गहरे अपना प्रभाव छोड़ गये थे।

कथा-कहानियों का विपुल साहित्य होश सँभालते ही आँखों के सामने से गुजरने लगा था, उसमें से अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकें निकालकर पढ़ना नित्य का नियम बन गया था। श्री भगवतीचरण वर्मा की `प्रायश्चित` और `दो बाँके` कहानियाँ ऐसे ही कभी पढ़ ली थीं। कथाशिल्प का किंचिन्मात्र ज्ञान न होने पर भी बालमन उन कहानियों के कथारस से भीग उठा था। `प्रायश्चित` में `सारी तैयारी हो जाने पर बिल्ली के भाग जाने` तथा `दो बाँके` में `बड़ी-बड़ी बातों के बाद दोनों बाँकों की सुलह` की संघटना पढ़कर मन ने कहानीकार को खूब सराहा था। संभवतः तभी मन में कहीं यह संकल्प पैठ गया था कि अवसर मिलने पर वर्मा जी के सम्पूर्ण कथा-साहित्य का विधिवत् अध्ययन करूँगी।

स्नातकोत्तर परीक्षा के दो वर्ष उपरान्त शोधकार्य में प्रवृत्त होने का निश्चय करके हमने तत्कालीन हिन्दी विभागाध्यक्ष स्वर्गीय डा० विपिन विहारी त्रिवेदी से अपना मंतव्य प्रकट किया। शोधकार्य के लिए उन्होंने अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। शोध-विषय का प्रश्न उठने पर उन्होंने मेरी रुचि देखकर `श्री भगवतीचरण वर्मा और उनका कथा-साहित्य` विषय निश्चित कर दिया।

भगवती बाबू आधुनिक हिन्दी साहित्य की अग्रिम पंक्ति के साहित्यकार हैं।

उनकी लेखनी साहित्य की उपन्यास, कहानी, निबंध,नाटक एवं कविता आदि लगभग सभी विधाओं पर समान गति और शक्ति के साथ चली है। अपने साहित्यिक जीवन का शुभारम्भ उन्होंने कविता-लेखन से किया और उन्हें उसके द्वारा पर्याप्त ख्याति भी प्राप्त हुई। उनकी कविता में कहीं छायावादी रूमानियत तो कहीं प्रगतिवादियों की भाँति सामाजिक वैषम्य के प्रति आक्रोश और यदाकदा नैतिक विचारों की अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने सुंदर एकांकी, अनेकांकी नाटकों एवं रेडियो रूपकों की रचना की, अपनी विशिष्ट साहित्यिक मान्यताओं को निबंधों में आबद्ध किया और पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। कुछ समय तक उन्होंने आकाशवाणी में सुगम संगीत एवं साहित्यिक प्रोग्राम प्रोड्यूसर के रूप में कार्य किया। साहित्य की विभिन्न विधाओं एवं क्षेत्रों से संबद्ध रहने के कारण उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के विविध रंग अपनी छटा प्रकीर्ण करते रहे हैं किन्तु इन सबके ऊपर उनका सर्वाधिक मास्वर स्वरूप कथाकार का ही है।

बहुत समय तक ऐसे प्रतिभाशाली सुस्थापित साहित्यकार का कथा-साहित्य हिन्दी के वरिष्ठ आलोचकों की समालोचना से प्रायः वंचित रहा किन्तु वर्मा जी के कथाकार पर इसका किंचित प्रभाव नहीं पड़ा, वह अबाध गति से कथा-सृजन में संलग्न रहे। प्रातिभ साहित्यकारों को बैसाखियों की आवश्यकता नहीं हुआ करती। कतिपय शीर्षस्थ समालोचकों की उपेक्षा के उपरांत भी आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रंथों तथा उपन्यास सम्बंधी शोध-ग्रंथों में वर्मा जी की औपन्यासिक कृतियों का विवेचन विश्लेषण हुआ है। पिछले दशक में उनके कथा-साहित्य को लेकर तीन ग्रंथ भी प्रकाशित हुए हैं - १.डा० कुसुम वार्ष्णेय का 'भगवतीचरण वर्मा- 'चित्रलेखा' से 'सबहिं नचावत राम गोसाईं' तक', सावित्री शर्मा का 'भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास : उपलब्धि और सीमाएँ' तथा ब्रजनारायण सिंह का 'उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा'। प्रथम तथा तृतीय आलोचनात्मक ग्रंथ हैं, द्वितीय एम० ए० का लघु शोध-प्रबंध है जिसमें केवल तब तक प्रकाशित उपन्यासों को ही लिया गया है। स्पष्ट है वर्मा जी के साहित्य से सम्बंधित शोधकार्य की आवश्यकता अभी तक बनी हुई थी।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध इस दिशा में एक विनम्र प्रयास है, जिसमें वर्मा जी के व्यक्तित्व के साथ-साथ उनके कथा-साहित्य (उपन्यास और कहानी) पर समग्र, सम्पूर्ण एवं तटस्थ दृष्टि से अनुसंधान किया गया है। वर्मा जी का साहित्य विपुल परिमाण में है,इसलिए

शोधकार्य को केवल उनके उपन्यास व कहानी साहित्य तक ही सीमित रखा गया है जिससे शोधकार्य के साथ न्याय हो सके एवं विवेचन में गहनता आ सके।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से शोध-प्रबंध को नौ अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में वर्मा जी की जीवनी उनके जन्म, बाल्यकाल, शिक्षा-दीक्षा, पारिवारिक जीवन, व्यावसायिक जीवन आदि को ध्यान में रखकर प्रस्तुत की गयी है। यों तो वर्मा जी की जीवनी के बहुत से तथ्य यत्रतत्र उपलब्ध हो जाते हैं किन्तु प्रबंध-लेखिका ने स्वयं उनसे भेंट करके, उन्हें पत्र लिखकर एवं प्रकीर्ण सामग्री का सदुपयोग करके उनके जीवन की व्यक्तिगत परिस्थितियों के समाकलन का निजी प्रयास किया है। पारिवारिक सदस्यों, इष्ट मित्रों एवं संघर्षशील परिस्थितियों के प्रभावस्वरूप वर्मा जी का एक विशिष्ट निर्भीक, अलमस्त एवं प्रखर व्यक्तित्व विकसित हुआ है जिसका प्रतिफलन उनके साहित्य के प्रत्येक रूप में हुआ है। जीवन एवं परिवेश की विषम परिस्थितियों के फलस्वरूप उनमें कवि, तार्किक एवं व्यंग्यकार आदि रूपों का स्वत: समावेश हो गया है जिनके समन्वित सदुपयोग से वर्मा जी के कथा-साहित्य को ऊर्जा एवं विविधता प्राप्त होती रही है। आज किसी साहित्यकार के साहित्य को समझने-परखने के लिए उसके जीवन एवं व्यक्तित्व से भलीभाँति परिचित होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि उसका सम्पूर्ण जीवन किसी न किसी रूप में उसकी रचनाओं में अवश्य प्रतिबिंबित होता है। इसीलिए प्रस्तुत अध्याय में वर्मा जी के जीवन, साहित्यिक-व्यक्तित्व, जीवन-दर्शन एवं मान्यताओं का संश्लिष्ट परिचय दिया गया है, जिससे वर्मा जी के 'व्यक्ति' एवं 'साहित्यकार' का समग्र चित्र स्पष्ट हो सका है। अपने निष्कर्षों की पुष्टि के लिए विभिन्न विद्वानों एवं साहित्यकारों के विचारों को उद्धृत किया गया है किन्तु संदर्भित सामग्री के मध्य अपने स्वतंत्र दृष्टिकोण एवं मौलिकता को भी बनाए रखने का प्रयास किया गया है।

द्वितीय अध्याय वर्मा जी के उपन्यासों के परिचय एवं वर्गीकरण से सम्बंधित है। वर्मा जी के अद्यावधि प्रकाशित सभी 14 उपन्यासों का उनके प्रकाशन काल, कथानक एवं विषय को दृष्टि में रखते हुए कालक्रमानुसार परिचय दिया गया है। उपन्यास के स्वरूप एवं प्रभाव को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों के मंतव्यों को उद्धृत किया गया है किन्तु निष्कर्ष पूर्णत: प्रबंध-लेखिका के हैं। अध्याय के अंत में वर्मा जी के उपन्यासों का वर्गीकरण भी प्रस्तुत किया गया है। यह वर्गीकरण मुख्यत: विषय-वस्तु को दृष्टि में रखकर किया गया है, जिससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि भले ही वर्मा जी के उपन्यासों

में व्यक्ति -स्वातंत्र्य का स्वर अधिक मुखर रहा हो किन्तु उनके उपन्यासों का `व्यक्ति` समाज से असम्पृक्त कभी नहीं रह सका है और उनके कुछ उपन्यास तो सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिवेश को इतने विशाल `कैनवास` पर प्रस्तुत करते हैं कि उन्हें सामाजिक उपन्यास से कदापि दूर नहीं किया जा सकता । इस प्रकार द्वितीय अध्याय वर्मा जी के उपन्यासों के कथानक मूलभूत विचारधारा एवं `उद्देश्य` को स्पष्ट करने की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है ।

तृतीय अध्याय में वर्मा जी के उपन्यासों में चित्रित व्यापक देशकाल एवं समाज का अनुशीलन किया गया है । उनके `पतन`, `टेढ़े मेढ़े रास्ते`,`भूले बिसरे चित्र`,`सीधी-सच्ची बातें` एवं `प्रश्न और मरीचिका` उपन्यासों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि वर्मा जी ने अपने लेखन के प्रारम्भिक काल में ही अपने उपन्यासों के माध्यम से भारत के इतिहास को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करने की योजना बना ली थी । लगभग सन् 1851 ई० से लेकर सन् 1963 ई० तक के भारत की जीवंत झाँकी उनके उपर्युक्त उपन्यासों में चित्रित हुई है । इसीलिए उनके उपन्यासों में उपन्यास का `देशकाल` नामक तत्व पर्याप्त सशक्त रहा है - अपने इस निष्कर्ष को प्रमाणित करने के लिए वर्मा जी के उपन्यासों में `वस्तु वर्णन` एवं `प्रकृति-वर्णन` के साथ देश की राजनीतिक,सामाजिक,सांस्कृतिक,धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का क्रमबद्ध विवेचन इस अध्याय में किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय में वर्मा जी के उपन्यासों के `कथा-संगठन-शिल्प` पर विचार किया गया है । वर्मा जी के उपन्यास-लेखन के 45 वर्षों में कथा-शिल्प के विविध प्रयोग हिन्दी उपन्यास-साहित्य में हुए हैं, कभी उनसे प्रभावित होकर और कभी स्वयं नवीन प्रयोग करके वर्मा जी ने अपने उपन्यासों की रचना की है और हिन्दी उपन्यास-जगत में अपने उपन्यासों को विशिष्ट स्थिति प्रदान की है । प्रस्तुत अध्याय में उपन्यास में प्रचलित कथा-संगठन की विविध शिल्प-विधियों के परिप्रेक्ष्य में वर्मा जी के उपन्यासों की शिल्प-विधि की विवेचना की गयी है । कुछ प्रमुख उपन्यासों के आधार पर वर्मा जी के उपन्यासों के गठन एवं रचना-प्रक्रिया की सामान्य विशेषताओं के अन्वेषण का मौलिक प्रयास प्रबंध-लेखिका ने किया है ।

पंचम अध्याय वर्मा जी के उपन्यासों में चरित्र-चित्रण से सम्बंधित है । उपन्यास-साहित्य में आज चरित्र-चित्रण को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाने लगा है, कथा इसीलिए चरित्रोन्मुखी हो चली है, वर्मा जी इन दोनों तत्वों के समुचित संतुलन के आधार पर उपन्यास-

रचना करने वाले कलाकारों में है - इसीलिए उनके उपन्यासों में चरित्र-चित्रण की विविध प्रणालियों का विनियोजन मिलता है। चरित्रों के मनोवैज्ञानिक प्रस्तुतीकरण के इस युग में वर्मा जी को कहीं इस कार्य में सफलता मिली है तो कहीं वे चूक भी गये हैं, किन्तु इस सम्बंध में हमने यह दिखाने की चेष्टा की है कि वर्मा जी के उपन्यासों के चरित्र मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के धरातल पर भले ही निर्मित न हुए हों, किन्तु आवश्यकतानुसार उनके मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों को उपन्यासकार ने बड़ी कुशलता से चित्रित किया है। उनके उपन्यासों के चरित्र यथार्थ जीवन के बीच से लाकर प्रायः ज्यों के त्यों रख दिए गए हैं, कथा के प्रवाह के अनुकूल उनमें कुछ परिवर्तन करने की आवश्यकता यदि कभी उपन्यासकार को प्रतीत हुई है तो भी उसने पात्रों की स्वाभाविकता को प्रायः बनाये रखने का यत्न किया है। अन्त में वर्मा जी के उपन्यासों के कुछ प्रमुख पात्रों का चरित्र-विवेचन भी प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठ अध्याय में उपन्यास में 'कथोपकथन' तत्व के महत्व की चर्चा करते हुए उसके सामान्य उद्देश्यों को चरितार्थ करने वाले वर्मा जी के औपन्यासिक कथोपकथनों का संक्षिप्त विवेचन किया गया है। तदनन्तर कथोपकथन के तथाकथित गुणों के निकष पर वर्मा जी के उपन्यासों के कथोपकथन का परीक्षण करके, उनकी सामान्य विशेषताओं का उद्घाटन किया गया है। इस संदर्भ में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में भावानुकूल एवं पात्रानुकूल कथोपकथनों का समावेश करके तथा यदाकदा नाटकीय संवादों का आश्रय लेकर उपन्यासों की रोचकता एवं सरसता में अभिवृद्धि की है।

सप्तम अध्याय में वर्मा जी के उपन्यासों की भाषा-शैली पर विचार किया गया है। अध्याय के प्रारम्भ में भाषा एवं शैली की सामान्य विवेचना करते हुए वर्मा जी के उपन्यासों में समाविष्ट विभिन्न भाषाओं के शब्द-भण्डार पर विचार किया गया है। तदुपरांत यह बताने का प्रयास किया गया है कि वर्मा जी के उपन्यासों में मुहावरों, कहावतों एवं सूक्तियों के समुचित प्रयोग ने उनकी भाषा को शक्ति, स्वाभाविकता एवं सौन्दर्य प्रदान किया है। भाषा के विशिष्ट प्रयोग से ही किसी साहित्यकार की शैली का रूप निर्मित होता है इसीलिए प्रस्तुत अध्याय के उत्तरार्द्ध में शैली के विभिन्न रूपों की संक्षिप्त चर्चा करते हुए वर्मा जी के उपन्यासों में प्रयुक्त शैली के आन्तरिक एवं वाह्य रूपों की विस्तृत विवेचना की गयी है। अंततः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में भाषा-शैली के अलंकरण के लिए लगभग सभी शब्द-शक्तियों एवं गुणों का प्रयोग तो किया है, किन्तु उनकी भाषा-शैली का सौन्दर्य मुख्यतः अभिधा

एवं प्रसाद गुण युक्त भाषा में निहित है। भाषा का सहज सरल प्रवाह उनकी विशेषता है।

अष्टम अध्याय में वर्मा जी की कहानियों का विस्तृत अनुशीलन 'वस्तु' और 'शिल्प' में विभक्त करके किया गया है। उपन्यासों से पृथक रखकर कहानियों का विवेचन इसीलिए किया गया है क्योंकि कहानी और उपन्यास में पर्याप्त साम्य है, वहीं उनके शिल्प में पर्याप्त भिन्नता भी दृष्टिगत होती है। अत: कहानी के विभिन्न तत्वों को विशेषरूप से दृष्टि में रखकर ही प्रस्तुत अध्याय के उत्तरांश में वर्मा जी की कहानियों का मूल्यांकन किया गया है। अध्याय के पूर्वांश में वर्मा जी की प्रमुख कहानियों की विषय-वस्तु देते हुए उनकी मूलभूत विचारनिधि के आधार पर उनका वर्गीकरण भी किया गया है। वर्मा जी की कहानियों की संख्या बहुत अधिक नहीं है, किन्तु उनकी अद्यावधि प्रकाशित कहानियों की विविधता एवं सामाजिक समस्याओं की कलात्मक अभिव्यक्ति ने उन्हें एक सफल कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित किया है तथापि उनके सुदीर्घ लेखन-काल में उनकी कहानी-कला में कोई विशेष अंतर नहीं आया है - यही निष्कर्ष रहा है।

नवम एवं अंतिम अध्याय 'उपसंहार' में वर्मा जी के कथा-साहित्य के सांगोपांग अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर वर्मा जी की उपलब्धियों के प्रति अपनी निष्पक्ष दृष्टि व्यक्त की गयी है एवं हिन्दी कथा-साहित्य में वर्मा जी के स्थान एवं स्थिति पर विचार किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध-प्रबंध की समाप्ति हुई है।

प्रबंध-लेखन में मुझे जिन-जिन विद्वानों की यत्किंचित् सहायता मिली है, उन सबके प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ। विशेषरूप से मैं हिन्दी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय गुरुवर डा० मदनगोपाल जी गुप्त एवं अपने शोध-निर्देशक आदरणीय डा० प्रतापनारायण जी श्रीवास्तव की अत्यंत अनुगृहीत हूँ जिनकी कृपा से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। मैंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति का अपने अध्ययन-काल में एक वर्ष तक उपयोग किया है, अतएव विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा अपने विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

(इन्दु शुक्ला)